M.A. (Two Years Degree Program)	
First Semester	
Subject- Hindi	
Code of the Course	HIN8002T
Title of the Course	**आदिकालीन काव्य**
Qualification Level of the Course	NHEQF Level 6
Credit of the course	4
Type of the course	Discipline Centric Compulsory (DCC) Course in Hindi
Delivery type of the Course	Lecture, 40+10+10=60hr. (The 40 lectures for content delivery + 10 on diagnostic assessment, formative assessment, +10 Tutorial)
Prerequisites	B.A.
Co-requisites	None
Objectives of the course	1.हिंदी के आदिकाल की काव्य प्रवृत्तियों की जानकारी देना। 2.तत्कालीन प्रमुख कवि तथा कृतियों से परिचय कराना। 3.पाठ्य कृतियों के सन्दर्भ में समीक्षा की क्षमता बढ़ाना।
Learning outcomes	1. हिंदी साहित्य इतिहास अध्ययन के माध्यम से चिंतन दृष्टि को विकसित हुई। 2. हिंदी साहित्यकारों एवं साहित्येतिहास के जीवन से प्रेरणा और संवेदनशीलता, रचनात्मकता का विकास हुआ। 3. हिंदी साहित्य के आदिकाल का सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों का कालक्रमिक विवेचन-विश्लेषण एवं ज्ञानवर्धन हुआ।
Syllabus	
UNIT-I	नरपति नाल्ह : बीसलदेव रास (पद संख्या 1 से 40) से व्याख्या और आलोचनात्मक प्रश्न। **(12 Hours)**
UNIT -II	चंदवरदाई : पृथ्वीराज रासो (पद्मावती समय) से व्याख्या और आलोचनात्मक प्रश्न। **(12 Hours)**

UNIT-III	विद्यापति पदावली से चयनित पदों की व्याख्या और आलोचनात्मक प्रश्न। चयनित पद- प्रार्थना- (विदिता देवी विदिता.....देवीसिंह नरपति।, कनक भूधर ..... कामना फलदे।, माधव बहुत मिनती.....एक देह दिनबंधु।, हरि जनि बिसरव .....करु दिअ सुलपानी। भल हर भल हरि .....नारायण ओ सूलपानी।) वंशी माधुरी- (नंदक नंदन .....वंदह नंदकिसोरा।), रूप वर्णन- (देख-देख राधा-रूप.....अहोनिसि कोर अगोरि।, चाँद-सार लए मुख ..... सिवसिंघ मिथिला भूपे।, सुधामुखि को बिहि .....देवि परमान।, वसंत मिलन- (माघ मास सिरि पंचमी .....सकल कला मना भाया।), विरह- (माधव तोंहे जुन.....अपना हृदय धरु सारा।, कालि कहल पियाए .....राए सिवसिंघ नहिं भोर।, मधुपुर मोहन गेल रे .....फेरि मिलत मुरारि।, सखि हे कतहु न देखि मधाई ..... बालम बिलसि समाजे।, अंकुर तपन ताप यदि .....विद्यापति रहु धाँदे।, सरदक ससधर मुखरुचि ..... लखिमा देह रमाने।, सखि हे हमर ..... हरि बिना दिन रातिया।, सजनि कानुक कहवि ..... फल भुजइत चाई।, सजनी, के कह आओब ..... झटित मिलन तुअ पासे।, सखि हे बालम जितव विदेस .....लखिमा देह रमान।) **(12 Hours)**
UNIT-IV	ढोला मारू रा दूहा (मारवणी का संदेश) के पदों की व्याख्या और आलोचनात्मक प्रश्न। **(12 Hours)**
UNIT-V	आदिकालीन काव्य की पृष्ठभूमि और प्रवृत्तियाँ। **(12 Hours)**
Text Books	1. नरपति नाल्ह : बीसलदेव रास। 2. चंदवरदाई : पृथ्वीराज रासो (पद्मावती समय), सम्पादक - डॉ. किशोरी लाल गुप्त, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद। 3. विद्यापति : विद्यापति पदावली, सं शिव प्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद। 4. ढोल मारू रा दूहा (मारवणी का संदेश), सं नरोत्तम स्वामी।
Reference Books	1. नामवर सिंह : पृथ्वीराज रासो : भाषा और साहित्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली। 2. हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली। 3. नामवर सिंह : इतिहास और आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली। 4. रामविलास शर्मा : परम्परा और मूल्यांकन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली। 5. हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली। 6. हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिंदी साहित्य का आदिकाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
Suggested E-resources	http://sahityabhawanpublications.com http://kavitakosh.org http://www.hindikavykosh.in